International Journal of Applied Research 2015; 1(3): 99-101

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(3): 99-101
www.allresearchjournal.com
Received: 25-01-2015
Accepted: 20-02-2015

विजेन्द्र कुमार आर्य
शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence:
विजेन्द्र कुमार आर्य
संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

व्याकरणसिद्धान्तसिद्धान्तसुधानिधि का अङ्गाधिकार

विजेन्द्र कुमार आर्य

तद् द्वारमपवर्गस्य वाङ्मलानां चिकित्सितम्।
पवित्रं सर्वविद्यानामधिविद्यं प्रकाशते।।

भर्तृहरि ने व्याकरणशास्त्र को वाणी के अपशब्दरूपी मलों की चिकित्सा करने वाला बताया है। उनके अनुसार व्याकरण मोक्ष का द्वार है इसलिए व्याकरण सभी विद्याओं में सर्वप्रमुख तथा पवित्र है। विद्वद्ज्जन व्याकरणशास्त्र को 'शब्दानुशासन' नाम से व्यवहृत करते हैं, जिसे पतञ्जलि ने 'शब्दानुशासनं नाम शास्त्रामधिकृतं वेदितव्यम्' इस प्रकार स्पष्ट किया है। उन्होंने लक्ष्य और लक्षण को व्याकरण कहा है। अभिप्राय यह है कि वह शास्त्र जिसमें सूत्रों अथवा नियमों से शब्द व्युत्पत्ति या शुद्धि विषयक ज्ञान कराया जाये, वह शास्त्र व्याकरण है। इस व्याकरणशास्त्र के विकास के क्रम में आचार्यो की एक सुदीर्घकालीन परम्परा ने अपना योगदान दिया है। इसमें पाणिनि का विशेष स्थान है, जिन्होंने अपने से पूर्ववर्ती आचार्यो की कृतियों का आलोडन करके सर्वाङ्गपूर्ण अष्टाध्यायी नामक व्याकरण ग्रन्थ की रचना की। कात्यायन ने इसे और भी परिपूर्ण करने के लिए वार्तिकों की रचना की। इसी परम्परा में पतञ्जलि ने व्याकरण महाभाष्य की रचना की जिसमें उन्होनें पाणिनि सूत्रों तथा कात्यायन के वार्तिकों की व्याख्या के साथ–साथ व्याकरणशास्त्र के दार्शनिक पक्ष को भी प्रस्तुत किया। भर्तृहरि ने भी वाक्यपदीय में व्याकरणमहाभाष्य का वैशिष्ट्य प्रतिपादित किया है जो इस प्रकार है–

कृतेऽथ पतञ्जलिना गुरुणा तीर्थदर्शिना।
सर्वेषां न्यायबीजानां महाभाष्यनिबन्धने।।
आलब्धलाभे गाम्भीर्यादुत्तान इव सौष्ठवात्।
तस्मिन्नकृतबुद्धीनां नैवावस्थित निश्चयः।।

वाक्यपदीय 2–477, 78

इस प्रकार पाणिनि, कात्यायन और पतञ्जलि संस्कृत व्याकरण के तीन प्रमुख व्याख्याता हुए हैं, जिन्हें व्याकरण परम्परा में 'त्रिमुनि' नाम से अभिहित किया जाता है। इन तीनों में व्याकरण का क्रमिक विकास देखने को मिलता है। इसीलिए पाणिनि की अपेक्षा कात्यायन और कात्यायन की भी अपेक्षा पतञ्जलि अधिक प्रामाणिक माने जाते हैं–

"यथोत्तरं मुनीनां प्रामाण्यम्।"

समय–समय पर पाणिनि की अष्टाध्यायी, कात्यायन के वार्तिक तथा पतञ्जलि के महाभाष्य को आधार बनाकर अनेक व्याख्याग्रन्थ तथा टीकाएं लिखी गई। इसी शृङ्खला में अट्ठारहवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में पण्डित विश्वेश्वरसूरि ने अष्टाध्यायी पर 'व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि' नामक सर्वातिशायी व्याख्या लिखी। यह व्याख्या महाभाष्य की गम्भीर गुत्थियों को तो सुलझाती ही है, साथ ही तत्तद् विषयों से सम्बन्धित साहित्य, न्याय, मीमांसा, वेदान्त आदि शास्त्रों पर भी विविध ऊहापोहपूर्वक चिन्तन प्रस्तुत करती है।
इस ग्रन्थ के आठ अध्यायों में प्रत्येक में चार–चार पाद हैं। ग्रन्थ के प्रत्येक सूत्र के व्याख्यान में छोटी से छोटी तथा बड़ी से बड़ी सम्भावित शङ्काओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। विश्वेश्वरसूरि ने अपनी रचना में भट्टोजिदीक्षित के शब्दकौस्तुभ को आदर्शरूप माना है। जो महाभाष्य पर रचित व्याख्या है। जब कि व्याकरणसिद्धान्तसुधनिधि सम्पूर्ण अष्टाध्यायी की बृहद व्याख्या है।
पाणिनि ने अष्टाध्यायी के कलेवर को सूक्ष्म एवं सुदृढ़ बनाने के लिए छः प्रकार के सूत्रों का आश्रय लिया–

संज्ञा च परिभाषा च विधिर्नियम एव च।
अतिदेशोऽधिकारश्च षड्विधं सूत्रलक्षणम्।।

उपर्युक्त सूत्र विभाग में अपने दूरगामी एवं व्यापक प्रभाव की दृष्टि से अधिकार सूत्र विशेष महत्त्वाधायी है। अधिकार सूत्र उत्तरोत्तर गमन लक्षण वाला माना जाता है। जो सूत्र एक अवधि तक आगे के सूत्रों में जाता है, उसे अधिकार सूत्र कहते हैं।
पतञ्जलि ने अधिकार एवं परिभाषा सूत्र के अन्तर को स्पष्ट करते हुए कहा है कि जहाँ अधिकार सूत्र प्रत्येक सूत्र में उपस्थित होकर अर्थ को स्पष्ट करता है वही परिभाषा सूत्र एकदेश स्थित होकर सम्पूर्ण शास्त्र को प्रदीप की तरह प्रकाशित करता है–

कः पुनरधिकारपरिभाषयोर्विशेषः अधिकारः
प्रतियोगं तस्य निर्देशार्थक इति योगे योगे उपतिष्ठते
परिभाषा पुनरेकदेशस्थासती सर्वं शास्त्रामभिज्वलयति प्रदीपवत्
महाभाष्य – 2/1/1

विश्वेश्वरसूरि ने अधिकार को स्पष्ट करते हुए कहा है कि अधिकार एक अवधि विशेष में व्याख्यान करता है–
अवधिविशेषे तु व्याख्यानं प्रमाणम्। आतृतीयाध्यायन्तं धात्वाधिकारो न तु लादेशेभ्यः प्रागेव। सप्तमाध्यायसमाप्तिपर्यन्तमाङ्गाधिकारो न तु प्रागभ्यासविकारेभ्य एवेत्यादिदर्शनात्।।

व्याकरणसिद्धान्तसुधनिधि – 1/3/11

अधिकार के प्रयोजन को भाष्यकार ने समाधान भाष्य में लिखा है–

"स्वरितेनाधिकारगतिर्यथा विज्ञायेत अधिकं कार्यम्। अधिकारः।।"
महाभाष्य 1/3/11

अष्टाध्यायी में अधिकार सूत्रों का अवलोकन करने पर प्रत्ययः, तद्धिताः, अङ्गस्य आदि प्राप्त होते हैं। जिनमें 'अङ्गस्य' यह अङ्गाधिकार सूत्र विशेष महत्त्वपूर्ण है।

अङ्गाधिकार–
'अङ्गग्यते ज्ञायते अर्थः अनेन इति' ऐसी व्युत्पत्ति करके गत्यर्थक ज्ञानार्थक अग् इक् धातु से 'घञर्थे कविधानम्' इस वार्तिक से करण अर्थ में क प्रत्यय होकर 'अङ्गम्' शब्द सिद्ध होता है।
पाणिनि ने अङ्गसंज्ञा के विषय में निम्न सूत्र प्रतिपादित किया है–

"यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्।"
अष्टाध्यायी 1/4/13

जो प्रत्यय जिस धातु अथवा प्रातिपदिक से विहित होता है, तदादि वह धातु अथवा प्रातिपदिक रूप प्रकृति है आदि में जिसके उस शब्दस्वरूप की जिस प्रत्यय का विधान किया गया है उस प्रत्यय के परे रहने पर अङ्ग संज्ञा होती है।
शास्त्रीय दृष्टि से अङ्गाधिकार विशेष महत्त्वपूर्ण है। इस अधिकार पर विश्वेश्वरसूरि ने व्याकरणसिद्धान्तसुधनिधि में विशेष रूप से विचार किया है। यह अधिकार अष्टाध्यायी के छठे अध्याय के चतुर्थ पाद से आरम्भ होकर सातवे अध्याय के अन्त तक है। इस अधिकार में संकलित सूत्रों की संख्या 612 है। यह अधिकार व्याकरणिक प्रक्रिया की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है, इसमें अङ्ग के कार्यो का निरूपण किया गया है।
अङ्गाधिकार का वैशिष्ट्य इसकी विविधता है। अङ्गकार्य में सिद्ध और असिद्ध का सामञ्जस्य दिखाने के लिए अङ्गाधिकार प्रकरण के अन्तर्गत एक दूसरा असिद्ध प्रकरण निर्दिष्ट है। अङ्गकार्य सम्बन्धी सिद्ध तथा असिद्ध कार्यो का निर्वचन किया जाना वैलक्षण्य सूचक है।

अङ्गाधिकार की विलक्षणता को ध्यान में रखकर ही विश्वेश्वरसूरि ने व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि में अङ्गाधिकार का निबन्धन छठे अध्याय के चौथे पाद से लेकर सातवे अध्याय के अन्त तक किया है। जो अपने आप में इसके वैशिष्ट्य का द्योतक है। इसकी पाण्डुलिपि के कुछ अंशों के नष्ट हो जाने के कारण इसमें वर्णित अङ्गाधिकार के कुछ सूत्रों की व्याख्या अधुना उपलब्ध नहीं है। यह निसन्देह खेद का विषय है। इन अनुपलब्ध सूत्रों की संख्या दस (10) है जो इस प्रकार है–

1. अङ्गस्य 6/4/1 ।।
2. हलः 6/4/2 ।।
3. श्नाभ्यस्तयोरातः 6/4/112 ।।
4. बहुलं छन्दसि 7/1/10 ।।
5. षट्चतुर्भ्यश्च 7/1/55 ।।
6. शृदृप्रां ह्रस्वो वा 7/4/2 ।।
7. ऋच्छत्यृताम् 7/4/11
8. केऽणः 7/4/13
9. न कपि 7/4/14
10. आपोन्यतरस्याम् 7/4/15

व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि अष्टाध्यायी के सूत्रों पर की गई व्याख्या है और अष्टाध्यायी में पाणिनि ने शब्दों का अन्वाख्यान उत्सर्ग तथा अपवाद सूत्रों के माध्यम से किया है। वे शब्द की साधुता के लिए प्रकृति एवं प्रत्यय की कल्पना करते हैं। प्रकृति से प्रत्यय होने के पश्चात् तदादि शब्दस्वरूप की अङ्ग संज्ञा होने के उपरान्त अन्य प्रक्रिया प्रवृत्त होती है जैसे 'रामाभ्याम्' शब्द सिद्धि में राम–भ्याम् इस स्थिति में राम की अङ्गसंज्ञा होने के बाद ही अङ्गाधिकारस्थ 'सुपि च' अष्टा. 7.3.102 सूत्र के अदन्त अङ्ग राम को सुप् प्रत्यय के परे रहते दीर्घ होकर 'रामाभ्याम्' निष्पन्न होता है। अत एव अङ्गाधिकार पाणिनि के शब्दानुशासन में विशेष उपयोगी है क्योंकि अङ्गाधिकारीय कार्य होने के उपरान्त ही शब्दपूर्णता को प्राप्त होकर भाषा में प्रयोग के योग्य होता है।

इति

सन्दर्भ – ग्रन्थ सूची

मूलग्रन्थ

1. अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, पाणिनि, सम्पादक–ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ सोनीपत वि. स. 2050
2. काशिकावृत्तिः, न्यासपदमञ्जरीयुक्त वामनजयादित्य, सम्पादक – द्वारिकादासशास्त्री, कालिकाप्रसाद शुक्लः, सुधी प्रकाशनम्, वाराणसी, द्वितीय संस्करण 1983
3. काशिकावृत्तिः, जयादित्य वामन अनन्तशास्त्रिसंपादिता, चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी, 1937
4. काशिकावृत्तिः, आर्येन्द्र शर्मा, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, 1969
5. काशिकावृत्तिः, न्यासपदमञ्जरीसंहिता, द्वारिकादास, प्राच्य भारतीय प्रकाशन, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी, 1965
6. काशिकावृत्तिः, विजयपालसंपादिता, श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, 1997
7. काशिकावृत्तिः, बालशास्त्रीसंपादिता, लाज्रेस प्रेस, बनारस, 1926
8. काशिकाविवरणपंजिका तथा न्यास जिनेन्द्रबुद्धि विरेन्द्र रिसर्च सोसायटी राजशाही, 1924
9. काशिका न्यासपदमञ्जरीभावबोधनीसंहिता, जयशंकर लाल त्रिपाठी, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
10. धातुप्रदीप : मैत्रेयरक्षित, श्रीशचन्द्र चक्रवर्ती, विमलचरन मैत्र, विरेन्द्र रिसर्च सोसायटी राजशाही, 1919
11. धातुपाठः, सम्पादक – ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, सोनीपत वि. स. 2050
12. पदमञ्जरी; हरदत्त मिश्र दामोदर शास्त्री, तारा पब्लिकेशन, वाराणसी, 1965
13. परिभाषावृत्तिः, सीरदेव, चौखम्बा बनारस, 1887

14. परिभाषेन्दुशेखर, नागेशभट्ट, श्रीशेषराम सर्वमङ्गलाख्यव्याख्यया समलङ्कृतः, संपादक गिरिजेश कुमार दीक्षित, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, 1967
15. परिभाषासंग्रह, सम्पादक, के.वी. अभ्यङ्कर, भण्डारकर प्राच्यशोधसंस्थानम्, पुणे, 1967
16. महाभाष्यम् पतञ्जलि प्रदीपोद्योतसहितम्, सम्पादक – श्री गुरुप्रसाद शास्त्री तथा बालशास्त्री, भाग 1–4, वाणी विलास प्रकाशन कचौड़ी गली बनारस, तृतीय संस्करण, 1967
17. महाभाष्य प्रदीपोद्योतछायासहितम्, नवनीतदास गुप्ता चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली
18. माधवीयाधतुवृत्तिः, सायणाचार्य, प्राच्य भारतीय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1964
19. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी बालमनोरमा – तत्त्वबोधिनी – सहिता, सम्पादक– गिरिधर शर्मा एवं परमेश्वरानन्द शर्मा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
20. माधवीयाधातुवृत्तिः, द्वारिकादास शास्त्री, प्राच्यभारती प्रकाशन वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1964
21. व्याकरणमहाभाष्यम्, सम्पादक– वेदव्रत ,प्रदीपोद्योतसहित हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, रोहतक, भाग–1, 1962, भाग 2–4 1963, भाग–5, 1962
22. व्याकरणमहाभाष्य, कैय्यटकृत प्रदीपेन नागेशभट्टकृतोद्योतेन सहितः वैद्यनाथ छायासंकलितः, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1967
23. व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि ,विश्वेश्वरसूरिकृत प्रथमो भाग, राजस्थान पत्रिका, श्यामगढ़ की हवेली, उदयमन्दिर मार्ग / मानजी का हत्था, पावटा 'बी' रोड, जोधपुर ,राजस्थान
24. व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधि ;विश्वेश्वरसूरिकृत द्वितीयो भाग राजस्थान संस्कृत अकादमी, ई–179, रमेश मार्गः सी–स्कीम, जयपुरम् ;राजस्थान
25. व्युत्पत्तिवादः, गङ्गाधरभट्ट, लक्ष्मीनाथ झा कृत 'प्रकाश' सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी, 1977
26. शब्द–कौस्तुभः, भट्टोजिदीक्षित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी, 1991

सहायक ग्रन्थ

1. जोशी, एस.डी. एण्ड जे.ए.एफ. रूड्बर्गनः अष्टाध्यायी आफ पाणिनि विद ट्रान्सलेशन एण्ड एक्सपेट्री नोट्स, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली–1991–2007
2. जोशी, एस.डी.एण्ड जे.ए.एफ. रूड्बर्गनः व्याकरणमहाभाष्य, समर्थाह्निक, अंग्रेजी अनुवाद व्याख्या एवं टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय, पूना – 1968
3. व्याकरणमहाभाष्य, कारकाह्निक, अंग्रेजी अनुवाद व्याख्या एवं टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय पूना–1975
4. व्याकरणमहाभाष्य, अनभिहिताह्निक अंग्रेजी अनुवाद, व्याख्या एवं टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय, पूना–1976
5. व्याकरणमहाभाष्य, विभक्त्याह्निक, अंग्रेजी अनुवाद व्याख्या एवं टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय, पूना–1980
6. व्याकरणमहाभाष्य, प्रातिपदिकार्थ शेषाह्निक, अंग्रेजी अनुवाद व्याख्या एवं टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय पूना – 1981
7. व्याकरण महाभाष्य, पस्पशाह्निक, अंग्रेजी अनुवाद व्याख्या एवं टिप्पणी, पूना विश्वविद्यालय पूना – 1986
8. जिज्ञासु, ब्रह्मदत्त एवं प्रज्ञादेवी, प्रथमावृत्ति : रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ सोनीपत – 2003
9. झा, सतीशचन्द्र, कात्यायनवार्तिकानां भाषाशास्त्रीयमध्ययनम्, बिहार विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर – 1985
10. त्रिपाठी, तीर्थराज, पदमञ्जर्यापर्यालोचनम्, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली–1981
11. त्रिपाठी, गिरीश चन्द्र, महाभाष्यसमीक्षणम्, इन्दौर – 1967
12. नरसिम्हाचार्य, एम. एस., महाभाष्यप्रदीपव्याख्यानानि, इंस्टिट्यूट फ्रेन्सिस डी. इन्डोलॉजी, पाण्डिचेरी – 1973
13. पाण्डेय, हरिशंकर शर्मा, पाणिनीय व्याकरणम्, शिवालिक प्रकाशन, दिल्ली
14. प्रकाश, आनन्द, वार्तिकप्रकाशः, चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी
15. भट्टाचार्य रामशंकर, पाणिनीय व्याकरण का अनुशीलन, इन्डोलॉजिकल बुक हाउस, वाराणसी – 1966
16. मीमांसक, युधिष्ठिर, संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास, रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़, सोनीपत – वि. स. 2030
17. वर्मा, सत्यकाम, संस्कृत व्याकरण का उद्भव और विकास, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली–1971
18. वेदालंकार, भीमसिंह, पातञ्जल महाभाष्य में प्रत्याख्यात सूत्र, परिमल प्रकाशन, दिल्ली–1987
19. वेदालंकार, रघुवीर, काशिका : एक आलोचनात्मक अध्ययन, दिल्ली–1987,
20. शर्मा, राम प्रकाश, पातञ्जलमहाभाष्य के ज्ञापकों का समीक्षात्मक अध्ययन, साहित्य भण्डार मेरठ, 1987
21. शास्त्री, भीमसेन, न्यासपर्यालोचन, भैमी प्रकाशन, दिल्ली
22. शास्त्री, शिवनारायण, महाभाष्य प्रदीपप्रकाश, परिमल प्रकाशन, दिल्ली–1991
23. सरस्वती, दयानन्द, अष्टाध्यायीभाष्यम् तृतीयाध्यायान्तम्, आर्ष साहित्य मण्डल अजमेर – 1985
24. Cardona, George, Panini (A Survey of Research), MLBD, 1997.
25. Limaye VP. Critical Studies on the Mahabhasya Hoshiyarpur, 1974.
26. Shastri, PS. Subramany, Lectures on Patanjali's Mahabhasya Vol. I Tiruchnapalli, 1944.
27. ---------- Lectures on Patanjalis Mahabhasya, II
28. ---------- Lectures on Patanjali's Mahabhasya, Annamalai, 1955, III.
29. LaghusiddhantaKaumudi of Varadaraja, Kanshi Ram, MLBD, 2010, I.
30. Laghusiddhantakaumudi of Varadaraja, Vol-II, Kanshi Ram, MLBD, 2011.
31. Joshi, SD. Two methods of Interpreting Panini (Journal), University of Poona, 1965.
32. Pandit, MD. Mathematical Representation of Some Paninian Sutras (Journal), University of Poona, 1966.